डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID : principalcmjcollege@gmail.com Web: www.cmjcollege.com Mob. No- 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स मैटेरियल (दिनांक– 03 अप्रैल, 2020)

हिन्दी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन की समस्या पर विचार

हिन्दी साहित्य के इतिहास के काल विभाजन में अनेक तरह की समस्याएं उपस्थित होती रही हैं, जिनमें मुख्य हैं –

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास का आरंभ कब से माना जाय ?
2. हिन्दी भाषा और अपभ्रंष भाषा के बीच पारस्परिक संबंध क्या है ?
3. उपलब्ध एवं ज्ञात साहित्य की प्रामाणिकता की समस्या।
4. साहित्य की कसौटी के निर्धारण में अनिष्चय की समस्या।
5. लुप्त और ग्रंथागारों में षेष बचे हुए साहित्य की जानकारी के अभाव की समस्या।
6. प्राचीन संग्रहालयों, मंदिरों, घरों आदि में स्थित पाण्डुलिपियों की खोज व उसे प्रकाषित करने की समस्या।

1. हिन्दी साहित्य के आरंभ को लेकर अनेक मत हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में जार्ज ग्रियर्सन का नाम महत्त्वपूर्ण है। ग्रियर्सन ने सातवीं षताब्दी से हिन्दी साहित्य के इतिहास का आरंभ माना है। ग्रियर्सन के इस मत से अन्य इतिहासकार सहमत नहीं हैं। इस संबंध में सर्वाधिक प्रसिद्ध इतिहासकार आचार्य रामचंद्र षुक्ल का मानना है कि पुरानी हिन्दी का जन्म सातवीं षताब्दी के आसपास हो चुका था, जिसमें सिद्धों, जैनियों एवं नाथपंथियों ने काव्य लेखन भी किया था, पर उनके काव्य में अपने–अपने धर्म और संप्रदाय की षिक्षाएं दी गयी हैं। इस कारण से आचार्य षुक्ल ने उन कवियों के काव्य को सांप्रदायिक षिक्षा समझकर छोड़ दिया और हिन्दी साहित्य का वास्तविक लेखन 1050 विक्रम संवत यानी 993 ई0 से माना। डॉ0 रामकुमार वर्मा एवं डॉ0 नगेन्द्र ने हिन्दी साहित्य का आरंभ 10वीं षताब्दी से स्वीकार किया। बाद चलकर चर्चित इतिहासकार हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी इसका आरंभ 10वीं षताब्दी से माना। इसका मतलब यह हुआ कि ग्रियर्सन जिस साहित्य को आधार मानकर साहित्य का आरंभ स्वीकार किया वह धर्म से संबद्ध या धर्म प्रचारित षिक्षा ग्रंथ था। कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्य के प्रायः इतिहासकारों द्वारा सर्वसम्मति से 10वीं षताब्दी से हिन्दी साहित्य के आरंभ पर सहमति बनी।
2. काल विभाजन की दूसरी बड़ी समस्या हिन्दी भाषा एवं अपभ्रंष भाषा के पारस्परिक संबंधों को लेकर है। इस संबंध में भाषा वैज्ञानिकों का विमर्ष बहुत महत्त्वपूर्ण है। भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार प्राकृत भाषा से अपभ्रंष भषा का जन्म हुआ और अपभ्रंष भाषा से हिन्दी का आरंभ हुआ। इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि अपभ्रंष ही हिन्दी की जननी है। राहुल सांकृत्यायन ने अपभ्रंष को 'पुरानी हिन्दी' कहा और अपभ्रंष के सारे कवियों को हिन्दी के कवियों के रूप में स्वीकार किया। राहुल सांकृत्यायन के इस मत के हिसाब से हिन्दी साहित्य का आरंभ 7वीं षताब्दी से माना जाना चाहिए तथा हिन्दी के पहले कवि के रूप में सरहपाद सिद्ध को स्वीकार

करना चाहिए। डॉ0 नगेन्द्र जैसे कुछ इतिहासकारों ने राहुल सांकृत्यायन का समर्थन करते हुए सिद्ध कवि सरहपाद को हिन्दी का पहला कवि माना है।

प्राचीन काल के मर्मज्ञ और चर्चित इतिहासकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने राहुल सांकृत्यायन के विचारों का दृढ़तापूर्वक खंडन किया है। उनके मतानुसार हिन्दी और अपभ्रंष एक नहीं है, बल्कि दोनों अलग–अलग भाषाएं हैं। हजारी प्र0 द्विवेदी के इस कथन को लेकर बाद में डॉ0 नामवर सिंह ने इसपर खोज की और यह स्पष्ट किया कि अपभ्रंष एक अलग भाषा है और उससे खड़ीबोली हिन्दी का विकास हुआ है। भाषा वैज्ञानिक और आचार्य रामचंद्र षुक्ल ने भी अपभ्रंष एवं हिन्दी को अलग–अलग भाषाओं के रूप में स्वीकृत किया है। हमें भी इसे दो अलग भाषाओं के रूप में ही समझना चाहिए।

3. तीसरी समस्या थी उपलब्ध एवं ज्ञात साहित्य की प्रामाणिकता। काल विभाजन की प्रक्रिया में दो तरह के मत प्रचलित थे। एक प्रारंभिक काल को आदिकाल कहते थे वहीं आचार्य रामचंद्र षुक्ल ने आदिकाल को साहित्य की मुख्य प्रवृत्ति के आधार पर 'वीरगाथा काल' कहा। आदिकाल नाम इतिहास की सैद्धान्तिक परंपरा के अनुकूल है, जबकि वीरगाथाकाल साहित्य की मुख्य प्रवृत्ति के अनुकूल है। इस नामकरण को लेकर षुक्ल जी और द्विवेदी जी के बीच मतभेद है। वीरगाथा से संबंधित जिन ग्रंथों की प्रामाणिकता को लेकर षुक्ल जी ने वीरगाथा काल कहना उचित समझा था, उनमें अधिकांष वीरकाव्यों की प्रामाणिकता और प्राप्ति को लेकर हजारी प्र0 द्विवेदी ने प्रष्न चिह्न खड़ा कर यह सावित कर दिया कि या तो अधिकांष पुस्तकें अप्राप्त हैं या अनुमान के आधार पर षुक्ल जी ने उसके होने की परिकल्पना कर 'वीरगाथा काल' नामकरण किया है। इसलिए हजारी प्र0 द्विवेदी 'आदिकाल' कहना ही उचित समझा।
4. साहित्य की कसौटी या काल विभाजन में किस पैरामीटर का निर्वाह किया जाय, इस बात को लेकर भी इतिहासकारों के बीच मतभेद रहा है। किन्तु इस संबंध में आधुनिक सभी विद्वानों की एक राय है कि साहित्य की प्रवृत्ति पर आधारित काल विभाजन की कसौटी ही अधिक वैज्ञानिक एवं तर्कपूर्ण है। इसलिए काल विभाजन की प्रक्रिया में आचार्य षुक्ल द्वारा निर्धारित पैरामीटर ही सबों ने स्वीकार किया है।
5. हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों के बीच लुप्त साहित्य या ग्रंथागारों में दबे हुए साहित्य को लेकर काफी चिन्ता है। लुप्त साहित्य के प्रकाषन से अनेक तथ्यों को उजागर किया जा सकता है। किन्तु इस ओर कोई सरकारी पहल नहीं हो रही है और न ही निजी स्तर पर कोई प्रयास किये जा रहे हैं। इसलिए इन लुप्तप्राय साहित्य तथा धूल और दीमक से समाप्त होने वाले साहित्य के प्रति चिन्ता स्वाभाविक है।
6. विभिन्न संग्रहालयों, मंदिरों और छोटे–छोटे राजाओं के अवषेषों में पड़े अनेक पाण्डुलिपियों की खोज अत्यंत आवष्यक है। लुप्त हो रहे पाण्डुलिपियों की खोज और उसके प्रकाषन से साहित्य की अनेक नयी संभावनाएं जुड़ी हुई हैं, किन्तु इस ओर आज भी कोई पहल नहीं की जा रही है, जिसके कारण अनेक दुर्लभ पाण्डुलिपियां लुप्त होने के कगार पर है।

<u>काल विभाजन के प्रचलित मुख्य आधार</u> :–

मुख्यतः काल विभाजन के मुख्य तीन आधार प्रचलित हैं :–

1. साहित्यिक प्रवृत्ति
2. राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रवृत्ति और

3 . मूल प्रवृत्तियों के आरंभ और अंत जहां से साहित्य की मूल चेतना का निर्धारण संभव हो, इस टर्निंग प्वाईंट से ही नये युग की षुरुआत मानी जानी चाहिए।

इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों द्वारा काल विभाजन के अनेक प्रयास किये गये हैं। हिन्दी साहित्य के पहले इतिहासकार गार्सा द तासी हैं। उनके द्वारा लिखित इतिहास 'इस्तवार दला लितेरेत्यूर ऐन्दुई हिन्दुस्तान' में नामकरण का उल्लेख नहीं मिलता है। दूसरे इतिहासकार षिवसिंह सेंगर ने 'षिवसिंह सरोज' नाम से इतिहास लिखा, किन्तु उनकी दृष्टि में भी नामकरण का कोई महत्त्व नहीं है। जार्ज ग्रियर्सन पहले इतिहासकार हैं, जिन्होंने नामकरण के मूल्य को समझा और एक नयी परंपरा को जन्म दिया। उनके प्रयासों के बाद हिन्दी साहित्य के इतिहास में नामकरण के विविध रूपों एवं नामकरण के आधार और उसमें आने वाली समस्याओं पर विद्वानों ने पर्याप्त विचार किया, इसे हम देख सकते हैं–

1. <u>जार्ज ग्रियर्सन द्वारा किये गये काल विभाजन</u> : –

क) चारण काल : 700 ई0 से 1300 ई0 तक
ख) 15वीं षती का धार्मिक पुनर्जारण
ग) जायसी की प्रेम कविता
घ) कृष्ण संप्रदाय
ङ) मुगल दरबार
च) तुलसीदास
छ) रीतिकाव्य
ज) तुलसीदास के अन्य परवर्ती साहित्यकार
झ) 18वीं षताब्दी
ञ) कम्पनी के षासन में हिन्दुस्तान
ट) विक्टोरिया के षासन में हिन्दुस्तान

जार्ज ग्रियर्सन का काल विभाजन विभिन्न अध्यायों पर आधारित है। उसमें वैज्ञानिकता और साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों का अभाव है। अनेक कमियों–खामियों के बावजूद नामकरण का प्रयास और एक नयी परंपरा का सूत्रपात अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

2. <u>मिश्रबन्धुओं द्वारा किये गये काल विभाजन का रूप</u> :–

1. <u>आरंभिक काल</u>

i) पूर्व आरंभिक काल : 743 विक्रम संवत से 1343 विक्रम संवत
ii) उत्तर आरंभिक काल : 1343 विक्रम संवत से 1444 विक्रम संवत

2. <u>माध्यमिक काल</u>

i) पूर्व माध्यमिक काल : 1445 विक्रम संवत से 1560 विक्रम संवत
ii) प्रौढ माध्यमिक काल : 1561 विक्रम संवत से 1680 विक्रम संवत

3. <u>अलंकृत काल</u>

i) पूर्व अलंकृत काल : 1681 विक्रम संवत से 1790 विक्रम संवत
ii) उत्तर अलंकृत काल : 1791 विक्रम संवत से 1891 विक्रम संवत

मिश्रबन्धुओं ने कालविभाजन को व्यवस्थित करने का प्रयास तो किया, किन्तु उसमें युगीन प्रवृत्तियों और एकरूपता को भूला दिया। दूसरे, अपभ्रंष की रचनाओं को हिन्दी की परिधि में समेट लिया, जो उचित नहीं है। बावजूद इसके मिश्रबन्धुओं का प्रयास ग्रियर्सन की अपेक्षा अधिक प्रौढ़ माना जा सकता है।

3. **<u>आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा किये गये काल विभाजन का रूप</u>** :–

तीसरा सर्वाधिक उपयुक्त और वैज्ञानिक काल विभाजन आचार्य रामचंद्र षुक्ल का है। सन् 1929 ई0 में आचार्य रामचंद्र षुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखा, जिसमें उन्होंने मिश्रबन्धुओं

को अपना आधार बनाया और कारण–कार्य सिद्धांतों के साथ साहित्य में निरूपित युगीन प्रवृत्तियों को अपना आधार बनाकर काल विभाजन किया।

1. **आदिकाल को वीरगाथाकाल** कहा और उसका समय विक्रम संवत 1050 से 1375 रखा।
2. **पूर्व मध्यकाल** को दो भागों में बांटा –1. भक्तिकाल : विक्रम संवत 1375 से 1700
   2. रीतिकाल : विक्रम संवत 1700 से 1900
3. **आधुनिक काल को गद्यकाल** कहा। समय : विक्रम संवत 1900 से अबतक

आचार्य षुक्ल का 'हिन्दी साहित्य को इतिहास' एक मजबूत आधार स्तम्भ माना गया, जिसमें अध्ययन के हिसाब से काल का विभाजन स्पष्ट व सुबोध दिखता है। वीरगाथा काल को लेकर हजारी प्र0 द्विवेदी ने सवाल उठाया और रीतिकाल को लेकर अनेक विद्वानों का मतभेद सामने आया। बावजूद इसके आचार्य षुक्ल का कालविभाजन सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

4. **<u>डॉ0 रामकुमार वर्मा द्वारा किये गये काल विभाजन का रूप</u>** :–
   1. संधिकाल : विक्रम संवत 760 से 1000
   2. चारणकाल : विक्रम संवत 1000 से 11375
   3. भक्तिकाल : विक्रम संवत 1375 से 1700
   4. रीतिकाल : विक्रम संवत 1700 से 1900
   5. आधुनिक काल : विक्रम संवत 1900 से अबतक।

रामकुमार वर्मा का संधिकाल मूलतः अपभ्रंष काल है। हिन्दी साहित्य का संबंध 7वीं सदी से मानना तर्कसंगत नहीं दिखता है। इसलिए यह काल विभाजन उपयुक्त नहीं है।

5. <u>आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा किये गये काल विभाजन का रूप</u> :–
   1. आदिकाल : सन् 1000 ई0 से 1400 ई0 तक
   2. पूर्व मध्यकाल : सन् 1400 ई0 से 1700 ई0 तक
   3. उत्तर मध्यकाल : सन् 1700 ई0 से 1900 ई0 तक
   4. आधुनिक काल : सन् 1900 ई0 से अद्यतन।

उपर्युक्त काल विभाजन के प्रयासों में सबसे अधिक उपयुक्त मान्यता प्राप्त काल विभाजन आचार्य रामचंद्र षुक्ल का माना जाता है। उन्होंने अपने काल विभाजन में बुनियादी तौर पर हिन्दी साहित्य की मूल प्रवृत्तियों को अपना आधार बनाकर साहित्य के समय और प्रवृत्तियों को सुव्यवस्थित ढ़ंग से पेष किया। बाद चलकर उनकी कुछ कमियों खामियों को उजागर करने का कार्य आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' और 'हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास' में किया, जिससे इतिहास की परंपरा का विकास हुआ। काल–निर्धारण में द्विवेदी जी ने केवल संवत की जगह ई0 सन् का प्रयोग किया है।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि कुछ सीमाओं के बावजूद आचार्य रामचंद्र षुक्ल का काल विभाजन अधिक वैज्ञानिक एवं तर्क संगत है। धीरेन्द्र वर्मा और गणपतिचन्द्र गुप्त ने भी इस ओर महत्त्व पूर्ण कार्य किया है। धीरेन्द्र वर्मा ने अन्य सहयोगियों द्वारा संपादित भारतीय हिन्दी परिषद् के इतिहास में इतिहास के परंपरागत काल विभाजन को स्वीकृत कर आदिकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल किया है। डॉ0 गणपतिचन्द्र गुप्त ने अपने इतिहास 'हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' में आचार्य षुक्ल के काल विभाजन को आधार बनाते हुए नवीन दृष्टिकोण के साथ काल विभाजन का वैज्ञानिक रूप प्रस्तुत किया है।

दिनांक : 03/04/2020 **डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**